शबे बरात-
मुक्ति व मग़फिरत कि रात

अल्लाह तआला ने अपनी इबादत व बन्दगी को अपने बन्दों की रचना का उद्देश्य घोषित किया। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी संप्रदाय को इसी लक्ष्य के समापन का सन्देश दिया, सहाबा किराम एवं अहले बैत रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने इसी लक्ष्य व मिशन को आगे बढ़ाया।

धर्म के पूर्वजों तथा संप्रदाय के धर्मनिष्ठ लोग इन्हीं पावन लोगों का पालन करते रहे, ना केवल उन्हों ने अल्लाह के बन्दों को तौहीद व रिसालत की विशाल सम्पत्ति से संबोधित किया, इसलाम धर्म के उद्देश्य से आभूषण करवाया, बल्कि खुद भी इस महत्व उद्देश्य के असार जीवन बिताने में व्यस्त हो गए।

अल्लाह तआला की बन्दगी का सबूत देते हुए, उस के दरबार में सजदे करते हुए रात व दिन को एक कर दिया, अपनी इबादतों के द्वारा रात की बारीकियों को दिन के उजालों से जोड़ दिया।

केवल अपने रब को सन्तुष्ट करने के लिए एवं उस की प्रसन्नता प्राप्त कनरे के लिए रातों में इबादतें करते रहने को अपना जीवन-पद्धति बना लिया। जैसा के क़ुरान पाक में अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः वे रातों में थोड़ी देर सोते थे एवं रात के अतिंम घड़ियों में क्षमा की प्रार्थना करते हैं।

(सुरह अज़ ज़ारियातः 51:17-18)

जो इबादत गुज़ार बन्दे रात के प्रातः घड़ियों में उठ कर इबादत करते हैं वे तो अल्लाह तआला के विशेष प्रदान व संबोधित प्राप्त करते हैं। उस के विशेष आनन्द व कृपा से आभूषण होते हैं। क्यों के रात के अंतिम भाग में अल्लाह तआला की तजल्ली होती है, किन्तु साधारण लोग सामान्य रूप से रातों को इबादत नहीं किया करते।

वह रातों में इबादत के आदी नहीं होते, इन साधारण बन्दों के लिए अल्लाह तआला ने विशेष रातें रखी हैं। जिस में रात के आरम्भ से ही विशेष प्रदान व वरदान का सिलसिला प्रारम्भ होता है।

अल्लाह तआला रात के आरम्भ हिस्से ही से विश्व के आकाश पर जलाल का प्रकट करता है, ताकि प्रत्येक व्यक्ति इस के आनन्द व कृपा से संबोधित हो जाए, प्रत्येक सदस्य वरदान से धनी हो जाए, अर्थात ऐसी ही रातों में शअबान की पंद्रहवी रात बरात की रात एवं क़द्र की रात है।

क़ुरान करीम में शबे बरात का वर्णन

इस रात के

बरकत वाली रात का उचित तात्पर्य

इस धन्य रात से संबंधित यह विस्तार वर्णन की गई के अल्लाह तआला ने इस रात क़ुरान मजीद को प्रकट किया है तथा शब खद्र से संबंधित भी क़ुरान करीम में यही विस्तार किया गया के वह क़ुरान के प्रकट होने की रात है।

यहाँ यह प्रश्न उठता हैः कैसे सम्भव हो सकता है के अल्लाह का कलाम शबे बरात में भी नाज़िल हो एवं शबे खद्र में भी?

इस स संबंधित विस्तार के लिए लेखक कि पुस्तक “फ़ज़ाइल शबे बरात- हदीसों के आधर पर” दर्शन करें। यहाँ तक मसले कि बाबत हज अबुल हसनात मुहद्दिस देक्कन रहमतु कि इबारत (हवाला) पर निश्चय किया जाता है। आप इस मसले कि --- फरमाते हुए लिखते हैं- शबे बरात का नाम अल्लाह तआला ने मुबारक रात रखा है तथा इस रात क़ुरान उतारा, ऐसा ही शबे खद्र के लिए फरमाया हम ने क़ुरान उतारा है।

घटना यह है के शबे बरात में क़ुरान उतारने की निर्देश हुआ तथा शबे खद्र प्रथम आकाश पर उतारा फिर 23 वर्ष तक थोडा-थोडा कर के धरती पर उतारता रहा।

(फ़ज़ाइल रमज़ानः 23)

शबे बरात- जीवन व मृत्यु एवं अन्य कि तक़सीम का नर्णय

हर व्यक्ति जानता है के इज़ाल --- से जो हुआ और अंत तक जो कुछ होने वाला है सब कुछ लोहे-महफ़ूज़ में लिख दिया गया है। किन्तु वर्ष भर घटना होने वाले कार्य व कर्म से संबंधित सम्पूर्ण अहकाम को शबे-बरात में स्वीकृत दी जाती है तथा फरिश्ते लोहे-महफ़ूज़ से इन निर्णयों को --- दफ्तरों में अनुच्छेद करते हैं।

और शबे खद्र में इन --- फाइलों को संबंधित फरिश्तों के हवाले कर दिया जाता है। इन फाइलों में लिखा हुआ होता है के इस वर्ष कितने लोग जन्म लेंगें। और कितने संसार से जुदा हो जाएंगे तथा किस को कितना रिस्ख --- मिलेगा।

जैसा के शुअबुल इमान अल रअवात अल कबीर लिल बैहखी, मिश्कातुल मसाबीह एवं ज़ुजाजातुल मसाबीह में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्ललम आदेश करते हैः कया तुम जानती हो इस रात यथा 15 रात शअबान में कया होता है! आप ने निवेदन कियाः इस में कया होता है? या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः इस वर्ष जन्म होने वाले सम्पूर्ण मनुष्यों के नाम इस रात लिस्त में लिख दिए जाते हैं, तथा इस वर्ष मृत्यु होने वाले सम्पूर्ण मानवों के नाम भी लिस्त में लिख दिए जाते हैं एवं इस में लोगों के कर्म (रब के सामने) पेश किए जाते हैं तथा इन के रिस्ख उतारे जाने का निर्णय कर दिया जाता है। आप ने निवेदन किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कया कोई भी अल्लाह तआला कि रहमत के बिना जन्नत में नहीं जा सकेगा? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई एक भी ऐसानहीं जो अल्लाह तआला कि रहमत के बिना जन्नत (स्वर्ग) में चला जाए। आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने यह 3 बार फरमायाः कहती हैं मैं ने निवेदन कियाः आप भी नहीं या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना पावन हाथ अपने सर अनवर पर रख कर 3 बार फरमाया नहीं, सत्य यह है के अल्लाह तआला हमेशां अपनी शान व प्रतिभा से मुझ पर रहमत कि चादर उढ़ाए रखता है। इसे हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने 3 बार दोहराते रहे।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 367, मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 114, अद दअवात उल कबीर लिल बैहखी, फज़ाइल अल औखात लिल बैहखी, हदीस संख्याः 28, शुअबुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3675, अल अलल मुतनाहियह अल जूज़ी, हदीस संख्याः 918, अल तबसिरह ला बिन अल जूज़ी)

शबे बरात में इ़बादत तथा दिन में रोज़े का प्रबंध

शबे बरात में ज़िक्र व नमाज़ व तिलावत आदि में व्यस्त रहना तथा सारी रात इ़बादत करना एवं दिन में रोज़ा रखना हदीस शरीफ से साबित है। अर्थात सुनन इ़ब्न माजह शरीफ, शुअ़बुल इ़मान, कंज़ुल उ़म्माल तथा तफसीर दुर्रे मन्सूर में हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अ़ली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमायाः सैयदना रसूल करीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः जब शअ़बान कि 15 रात हो तो इस रात इ़बादत करो तथा इस के दिन में रोज़ा रखो। क्यों के अल्लाह तअ़ाला इस रात सूर्य ड़ूबते ही संसार के आकाश कि ओर प्रकट फरमाता है तथा इरशाद फरमाता हैः कया कई मुक्ति का इच्छुक है के मैं इसको बख्श दुँ। कया कोई रिस्ख चाहने वाला है के मैं इस को रिस्ख दान करुँ। कया कोई कठिनाई का मारा हुआ है के मैं इस को विश्राम दान करुँ। कया कोई ऐसा है! कया कोई ऐसा है! यहाँ तक के फज्र तुलू हो।

(सुनन इब्न माजह, हदीस संख्याः 1451, शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3664, कंज़ुल उ़म्माल हदीस संख्याः 35177, अल तफसीर दुर्रे मन्सूर, सुरह अल दुक़्क़ान, आयत 04)

इस रिवायत से शबे बरात में इ़बादत करना तथा दिन में रोज़े का सुन्नत होना वर्णन है इस से स्पष्ट रुप से मालूम हो रहा है के यह रात अज्ञानता में रहने कि रात नहीं, बल्कि शबे बेदारी तथा सहर क़ैज़ी --- कि रात है।

अल्लाह तअ़ाला के दरबार से रहमतें लूटने की रात है। जीवन में बरकत प्राप्त करने तथा कठिनाई व परेशानियों से छुटकारा पाने की रात है।

शबे बरात कि उत्तमता --- कि हदीसों से वर्णित

अ़ल्लामा हैसमी ने अपनी पुस्तक मजमअ़ अज़ ज़वाईद में शबे बरात कि उत्तमता में हदीस लिखित करते हुए इ़माम तबरानी कि मुअ़जम कबीर व मुअ़जम औसत सेइस बाब में 2 रिवायतें अनुच्छेद किएं तथा इन के रावियों को निश्चिंता के अनुसार घोषित देते हुए वर्णन किया हैः-

भाषांतरः- तथा इन दोनों हदीस शरीप के रावी --- मोतेबर सखा हैं।

(मजमअ़ अज़ ज़वाईद, किताबुल आदब, बाब माजा फी अल हिजरान)

शबे बरात कि उत्तमता से संबंधित लगभग 16 सहाबा किराम से रिवायतें वर्णित है। इन का विस्तार के लिए लेखक कि पुस्तक "शबे बरात-फज़ाइल" हदीसों के आधार में दर्शन की जा सकती है। जिस में ज़क़ाइज़ हदीस के 28 हवाले जात को शामिल किया गया है।

शबे बरात रहमत के 300 दरवाज़े खोल दिए जाते हैं

शबे बरात जिब्रील अमीन सिद्रह के मकीन रहमत वाले पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के सामने उपस्थित हो कर इस रात इ़बादत करने वालों कि सौभाग्य कि गवाही सुनाते हैः-

भाषांतरः- सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैं के आप ने आदेश फरमायाः शअ़बान कि 15 रात मेरे पास जिब्रील अलैहिस सलाम ने उपस्थित हो कर कहाः ऐ पैकर हम्द व सना! अपना सर अनवर आकाश कि ओर उठाएं। मैं (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने कहाः वाह- इस रात` के कया कहने! जिब्रील ने निवेदन किया इस रात अल्लाह तआ़ला रहमत के 300 दरवाज़े खोलता है एवं हर इस व्यक्ति को बख्शिश फरमा देता है जिस

ने इस के साथ कुछ शरीक ना किया हो। सिवाए यह के वह जादूगर हो या काहिन होया शराबी हो या हमेशा का सूदखोर तथा बदकार हो क्यों के इन लोगों को मुक्ति नहीं दी जाएगी यहाँ तक के वहतौबा कर लें।

फिर जब चौथाई रात हुई तो जिब्रील ने सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन किया: ऐ पैकर हम्द व सना! अपना सर अनर उठाएं तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपना सर अनवर उठाया तो जन्नत के दरवाज़े खुले हैं। प्रथम दरवाज़े पर एक फिरिश्ता घोषणा कर रहा है: इस व्यक्ति के लिए खुशी के समाचार है जिस ने इस रात रुकुअ किया, दूसरे दरवाज़े पर एक फरिश्ता आवाज़ दे रहा है: इस व्यक्ति के लिए खुशा के समाचार हैं जिस ने इस रात सजदा किया, तीसरे दरवाज़े पर एक फरिश्ता घोषणा कर रहा है: गवाही है इस व्यक्ति के लिए जिस ने इस रात दुआ़ की, चौथे दरवाज़े पर एक फरिश्ता घोषणा कर रहा है: इस रात ज़िक्र करने वालों के लिए मसदह है। पाँचवें दरवाज़े पर एक फरिश्ता आवाज दे रहा है: खुशी के समाचार है इस व्यक्ति के लिए जो इस रात अल्लाह तआ़ला के खौफ व भय से रोए, छटे दरवाज़े पर एक फरिश्ता आवाज दे रहा है: ---- इस रात पालन व इतआ़त करने वालों के लिए बशारत है। सातवें दरवाज़े पर एक फरिश्ता आवाज़ दे रहा है: कया कोई मांगने वाला है के इस कि मांग पूरी की जाए। तथा आठवें दरवाज़े पर एक फरिश्ता घोषणा कर रहा है: कया कोई बख्शिश का इच्छुक है के इसे बख्श दिया जाए। मैं ने कहा: ऐ जिब्रील! यह दरवाज़े कब तक खुले रहते हैं। जिब्रील ने विनती की: रात के प्रारम्भ भाग से फज्र तुलू (प्रकट) होने तक फिर निवेदन किया: ऐ पाकर हम्द व सना! अवश्य इस रात अल्लाह तआ़ला क़बीले बनु काब --- कि बकरियों के बालों कि संख्या बन्दों को दौज़क़ (नरक) से आज़ाद करता है।

(अल ग़ुन्नतुल तालिबी तरीख़ अल हक़----, जिल्द 1, प: 191)

वह लोग जिन कि शबे बरात बख्शिश ना होगी

यह तत्व चिन्ता का है के सारे लोग अल्लाह तआला कि रहमतों को प्राप्त कर रहे होंगे, इस के वरदानों से अपनी झोलियों को भर रहे होंगे तथा इस अनुदान वाली रात वपदानों से अपने भाग्य चमका रहे होंगे, ऐसी उपहार वाली रात मग़फिरत ना पाना अवश्य महरूमी व वंचित कि बात है एवं अपनी स्थिति पर पश्चाताप व अफसोस करने कि बात है के रहमत वाले पैगम्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हमें इस रात कि विशिष्ठा से सचेत कर दिया।

इस रात बटने वाली रहमतों, बरकतें तथा छुकारे का वर्णन भी फरमा दिया। बात यही समाप्त ना हुई, बल्कि हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हम पापियों कि बन्दापरवरी फरमाते हुए, इस रात वंचित रहने वालों कि विस्तार भी बतला दी।

अर्थात इस प्रकार करम का मामला फरमाया के यदि कोई शिर्क व बदअ़खीदगी, हत्या व घातक तथा द्वेष रखने में व्यस्त हो तो शिर्क व बदअ़खीदगी को सम्पूर्ण रूप से छोड दें तथा अन्य पापों पर सत्य दिल से तौबा करलें।

इसे रहमत के साये में स्थान दे दी जाएगी, यदि कोई बन्दीकरण व लूटमार तथा सूदखोरी व शराबी में व्यस्त हो तोइन बुराईयों से बाज़ आ जाए तथा इन्हें आगे ना करने का वचन करें, संबंधित सदस्य के अधिकार समापन करें तथा इन के वस्तु वापस कर दें तो इस कोताहियों को दूर कर दिया जाएगा एवं इस के पापोंको भी क्षमा कर दिया जाएगा।

इसी प्रकार यदि कोई जादू (माया) कर रहा है, नातेदार व रिश्तेदारी काट रहा रहा है तथा माता-पिता कि आज्ञालंघन व नाफरमानी कर रहा है तो अपनी इस स्थिति पर अफसोस व पश्चाताप करें।

अल्लाह तआ़ला के दरबार में विनम्रता व दुःख के आंसू बहां तथा अपने माता-पिता के साथ शिष्ठाचार व सभ्याचार के साथ पेश आएं तथा अधिकार वालों के अधिकार संपादन करें तो अल्लाह तआ़ला इसे भी वंचित व महरूम नहीं फरमाएगा तथा इस रात कि बरकतों से अवश्य धनी व मालामाल करेगा।

यदि सरवर कौनैन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम इन पापों कि विस्तार ना बतलाते होते तो यह सम्पूर्ण लोग महरूम रह जाते। आप ने अपनी रहमत वाली शान के आद्यान्त प्रदान किया तथा अपने विशाल ज्ञान तथा नबूवत के नेत्र के दृष्ठि के द्वारा उन सम्पूर्ण विस्तार से हमें सचेत कर दिया।

अर्थात शुअ़बुल इमान में हदीस पाक है, उम्मुल मोमिनीन सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से वर्णित है, वह शबे बरात के बारे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का लोकोक्ति वर्णन करती हैः-

भाषांतरः- हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः शबे बरात जिब्रील अलैहिस सलाम मेरे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) पास आए तथा निवेदन कियाः यह रात शअ़बान कि 15 रात है, इस रात अल्लाह तआ़ला क़बीले बनी कूब --- की बकरियों के बालों कि संख्या में नरक से पापियों को आज़ाद करता है, तथा इस रात चंद लोग कि ओर रहमत कि नज़र नहीं फरमाता (वह यह हैः) मुशरिक, बदअ़खीदह तथा द्वेष रखने वाले, नाता व रिश्ता तोड़ने वाला, टखनों के नीचे वस्त्र रखने वाला, माता-पिता का नाफरमान, शराबखोर।

(शुअ़बुल ईमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3678)

इस हदीस पाक के अतिरिक्त शबे बरात अल्लाह कि रहमतों से वंचित रहने वाले सदस्य से संबंधित हदीसों में विस्तार मिलती है, जिन कि संख्या लगभग 14 हैं। वह यह हैः-

1- मुशरिक
2- बदअ़खीदह
3- द्वेष रखने वाले
4- हत्यारा
5- बलातकारी
6- माता-पिता का आज्ञालंघन व नाफरमान
7- नातेदारी व रिश्ते तोडने वाला
8- सूदखोर
9- शराबी
10-जादूगर
11-काहिन
12-लूटेरा
13-नाजाइज़ रूप से महसूल वसूल करने वाला
14-टखनों के नीचे वस्त्र रखने वाला।

जब तक यह लोग तौबा ना करें, अधिकारियों का अधिकार समापन नाकरें, इन को तौबा स्वीकृत के स्तर तक नहीं पहुंचती।

इस से संबंधित विस्तार के लिए लेखक कि पुस्तक *शबे बरात- रहमते इलाही से महरूम कौन ?* देखी जा सकती है।

शबे बरात क़ब्रों कि ज़ियारत का प्रबंध

हदीसों में मज़ारात कि ज़ियारत से संबंधि सामान्य आज्ञा के अतिरिक्त विशेष रूप से शबे बरात में ज़ियारत करने का सबूत मिलता है। अर्थात जामे

तिरमिज़ी शरीफ, सुनन इ़ब्न माजह शरीफ, मुसनद अहमद, अल तरग़ीब वल तरहीब, अल ग़ुनियतुल तालबी तरीख उल हक़ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- उम्मुल मोमिनीन सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने फरमाया मैं एक रात हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को ना पाई, मैं निकली तथा देखा के आप बखीअ़ में निवास कर रहे हैं, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया के तुम्हें आशंका हुई के अल्लाह तआ़ला और इस के रसूल तुम पर अधिकता करें ? मैं ने निवेदन किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ! मैं ने ध्यान किया के आप किसी और प्रिय पत्नी के पास तशरीफ ले गए होंगे तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआ़ला शबे बरात को संसार के आकाश पर प्रकट होता है तथा बनी कूब कि बकरियों के बालों कि संख्या से अधिक लोगों कि मग़फिरत (मुक्ति व मोक्ष) फरमाता है।

(जामे तिरमिज़ी शरीफ, जिल्द 1, पः 156, हदीस संख्याः 744, सुनन इ़ब्न माजह शरीफ, हदीस संख्याः 1379, जिल्द 1, पः 99, मुसनद अहमद, हदीस संख्याः 24825, मुसनद अल अन्सार, हदीस संख्याः 2482, मुसन्नफ इ़ब्न अबी शैबह, जिल्द 7, पः 139, शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3666, कंज़ुल उ़म्माल, हदीस संख्याः 35184, तफसीर अल दर्रुल मंसूर, सुरह अल दुख्खान 1, जिल्द 2, पः 119, अल ग़ुनियतुल तालबी तरीक़ अल हक़, जिल्द 1, पः 191)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पावन पत्नियोंके साथ रहने के लि बारी निश्चित करते ते जिस समय सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के भवन में तशरीफ फरमा थे इस समय रात का कुछ भाग गुज़रने के बाद

उम्मुल मोमिनीन के पास से बखीअ़ शरीफ ज़ियारत के लिए तशरीफ ले गए।

उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने हुज़ूर अखदस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को अपने पावन घर में नापाया तो प्रारंभ ध्यान गुज़रा के शायद अन्य पावन पत्नियों में से किसी सौभाग्य पत्नी के पास तशरीफ ले गए हों।

फिर जब आप हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का विचार अवलोकन किए तो वायु ने दिल के दामन को खींच कर बखीअ़ शरीफ तक पहुंचा दिया। सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सुगंध से गलियां, फिज़ाएं मुअ़त्तर व सुगन्धित व सुवास रहतीं।

तथा आशिखों को पता देतीं के महबूब कि सवारी यहाँ से गुज़रते हुए हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के देख लेते हैं। अर्थात जब उम्मुल मोमिनीन ने देखा के हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम बखीअ़ शरीफ में सजदे कि स्थिति में दुआ़ कर रहे हैं। जैसा के हज़रत मुल्ला अ़ली खारी मिरखाह, शरह मिश्कात में लिखते हैः-

भाषांतरः- तथा दूसरी रवियात में हैः उ़म्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने देखा के सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम बखीअ़ शरीफ में सजदा रेज़ हैं। इतना लम्बा सजदा फरमाया के मैं समझी के हुज़ूरी हक़ से वापस ना हुए, जब सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने सलाम फेरा तो मेरी ओर ध्यान फरमाया।

(मिरखाह अ मफातीह, जिल्द 1, पः 171)

इस धन्य रात में सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बखीअ़ शरीफ जाने से मालूम होता है के इस रात भी क़ब्रों कि ज़ियारत मसनून व मुसतहब है।

क्या हर शबे बरात के अवसर पर क़ब्रों कि ज़ियारत सुन्नत है ?

कुछ लोग यह कहते हैं "सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम एक बार शबे बरात में क़ब्रों कि ज़ियारत के लिए तशरीफ ले गए थे, इसी लिए जीवन में केवल एक बार ज़ियारत कर ली जाए तो कोई समस्या नहीं, प्रति वर्ष शबे बरात के अवसर पर क़ब्रों कि ज़ियारत का प्रबंध बिदअ़त (नवरचना व नवीनता) है।"

इन का यह कथन बिना दलील व सबूत के दावा करना है। जो शरीअ़त के आधार पर स्वीकृत के योग्य नहीं हो सकता। क्यों के हदीसों के पुंज में कहीं यह स्पष्टीकरण नहीं आई है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने बार-बार या प्रत्येक वर्ष ज़ियारत नहीं फरमाई बल्कि इस के लिए यह शहादत उपलब्ध है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम सामान्य दिनों में भी क़ब्रों कि ज़ियारत का प्रबंध व प्रक्रिया करते तथा यह बात सत्य से अत्यन्त --- है के सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम शबे बरात में केवल एक बार क़ब्रों कि ज़ियारत के लिए तशरीफ ले गए क्यों के हदीस शरीफ में आया है के जब भी हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा कि बारी होती सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम इस रात बखीअ़ शरीफ तशरीफ ले जाते।

जैसा के सहीह मुस्लिम किताबुल जनाइज़, जिल्द 1, पः 313, पावन हदीस हैः-

भाषांतरः- हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से वर्णित है, फरमाती हैः जब भी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के

साथ इन की बारी होती तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) रात के अंतिम भागमें बखीअ़ मुबारक तशरीफ ले जाते तथा फरमाते "तुम पर सलामती हो ऐ ईमान वालो! तुम्हारे पास पहुंचा है जिसका तुम से वचन लिया जाता था, क़यामत के दिन मिलने वाले वरदान व नेअ़मतें तुम्हारे लिए तैयार रखी हुईहैंतथा अवश्य हम तुम से मिलने वाले हैं। ऐ अल्लाह! अहले बखीअ़ की बख्शिश फरमादे।"

(सहीह मुस्लिम, जिल्द 1, पः 313, किताबुल जनाइज़, हदीस संख्याः 2299, सुनन अन निसाई, हदीस संख्या 2012, मुसनद इ़माम अहमद, मुसनद अल अन्सार, हदीस संख्याः 24297, सहीह इ़ब्न हिब्बान, जिल्द 7, पः 444, हदीस संख्याः 3172, ज़ुजाजातुल मसाबीह, बाब ज़ियारत क़ुबूर, जिल्द 1, पः 487)

यदि किसी को यही रुचिर हो के सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने केवल एक बार ज़ियारत फरमाई है तब भी नफसे-ज़ियारत तो साबित हुई। यदिकोई उम्मती एक बार या प्रत्येक वर्ष प्रबंध करे तो विशेष रूप वह अल्लाह तआ़ला के पास महबूब व प्रिय ही होगा।

इसलामी पुस्तकों को पढ़ने वालों पर यह बात छिपी नहीं के जो कर्म सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने एक बार या चंद बार फरमाया हो इस पर समुदाय कि पाबंदी से वह सुननत बिदअ़त (नवरचना व नवीनता) नहीं होती बल्कि पाबंदी कि खद्र में अ़मल करने वाला पुण्य व प्रतिफल का योग्य होता है।

जैसा के सहीह बुक़ारी में हदीस पाक में हैः-

भाषांतरः- अवश्य अल्लाह तआ़ला के पास महबूब व प्रिय कर्म वह है जिस पर पाबंदी – की जाए, अगरचे वह थोडा हो।

(सहीह बुक़ारी, हदीस संख्याः 6464, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्याः 783, सुनन निसाई, हदीस संख्याः 754)

तथा सहीह मुस्लिम शरीफ कि रिवायत हैः-

भाषांतरः- हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अहले बैत किराम जब भी कोई कर्म करते तो इस पर पाबंदी व सर्वथा व हमेशां करते।

(सहीह मुस्लिम, हदीस संख्याः 1863)

शबे बरात आतिशबाजी कि निषिद्ध

आतिशबाजी बिना किसी लाभ के धन व्यर्थ होता है। यह फिजूल खर्ची तथा इसराफ है। अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और नातेदार को उसका अधिकार दो तथा मुहताज और यात्री को भी, और फ़ुज़ूलखर्ची ना करो। निश्चय ही फ़ुज़ूलखर्ची करनेवाले शैतान के भाई हैं तथा शैतान अपने रब का बड़ा ही कृतघ्न है।

(सुरह बनी इसराईलछ 17:26/27)

आतिशबाजी (अग्निक्रीड़ा) में किसी भाग के विनास होने कि आशंका रहती है जबके शरीअ़त में अपने आप को विनाश व हानि में ड़ालने से मना किया गया है। अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः- तुम अपने ही हाथों से अपने-आपको तबाही में ना डालो।

(सुरह अल बक़राः 02:195)

मुसलमान कि यह प्रतिभा नहीं के वह अपने अनमोल समय को व्यर्थ व निर्थक कार्य में प्रयोग करें। जैसा के जामे तिरमिज़ी शरीफ जिल्द 2, पः 58 में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- मानव के मुसलमान होने के गुण यह है के वह व्यर्थ चीज़ छोड दें।

इसी लिए फुक़्हा किराम ने यह स्पष्टीकरण की हैः मुसलमान के लिए हर अचेत व अज्ञानी करने वाले खेल निषिद्ध व मकरूह है।

(अल रद्दुल मुक़तार, जिल्द 5, पः 279)

इन आपत्ति व खराबियों के कारण से आतिशबाजी शरीअ़त इसलामिया में --- श्रेष्ठ नहीं विशेष रूप से इस धन्य व प्रतिभाशाली रात में अल्लाह तआ़ला कि सन्तुष्टी तथा तौबा व इस्तेग़फार करने के बजाए आतिशबाजी में व्यस्त रहना अल्लाह की रहमत से दूरी प्राप्त करने तथा अल्लाह के वरदान व नेअ़मतों का अनादर करने के बराबर है।

हज़रत शाह अबदुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा हैः-

भाषांतरः- इन बुरी बिदअ़तों (नवरचना व नवीनता) में जो हिन्दुस्तान के निवासियों में रीति-रिवाज पकडी है आतिशबाजी, पटाखे छोडना तथा गंधक जलाना है।

(मासबदत बिल सनह, 87)

मुसमान इस पावन तथा रहमत वाली रात में आतिशबाजी जैसे व्यर्थ व निर्थक कार्य से दूर रहने तथा अल्लाह तआ़ला कि रहमतों से अपने दामन को भर लें।

शबे बरात में विशेष रूप से शरीअ़त के विरुद्ध कार्य से दूर रहें

इसलाम अमन व सलामती दान करने वाला, संस्कृति व --- की शिक्षा देने वाला पावन धर्म है। जिस के अहकाम व सिद्धान्त सर्व जाति के हर सदस्य व हर क़बीे, हर रंग व नसल, हर भाषा व देश के लिए अमन व शान्ति, राहत व धीरज प्रदान करते हैं। जिस का सन्देश अमन से अपने मान्ने वालों तक ही सीमित नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवजाती के लिए है।

धरती पर किसी भी प्रकार का फितना व फसाद, नुकसान व हानि, हत्या व भ्रष्टाचार इस धर्म में बिल्कुल नाजाइज़ व निषिद्ध है। अल्लाह तअ़ाला का आदेश हैः-

भाषांतरः-

(सुरह अल अहज़ाबः 65)

मुसलमान कि शान व प्रतिभा यह है के वह अपने कर्म व वार्तालाप से किसी को हानि ना पहुंचाए तथा सारे लोग इस से सुरक्षित रहें। मिशकात जिल्द 1, पः 15, में जामे तिरमिज़ी व सुनन निसाई के हवाले से अनुच्छेद हैः-

भाषांतरः- सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मुसलमान वह है जिस कि ज़बान व हाथ से मुसलमान सुरक्षित रहें, एवं मोमिन वह है जिस से सारे लोग अपनी जान व सम्पत्ति से संबंधित बेखौफ रहें।

इसलामी शासन में इस बात कि स्पष्टीकरण है के ग़ैर मुसलिम से भी तकलीफ को दूर करना तथा इस कि दुःख देने से भी दूर रहना अवश्य है। दर्रुल मुक़तार, जिल्द 3, पः 272, में हैः-

भाषांतरः- ग़ैर मुस्लिम कि तकलीफ दूर कना अनिवार्य तथा इस कि चुग़ली व ग़ीबत करना हराम है जिस प्रकार किसी मुसलमान को तकलीफ देना तथा इस की ग़ीबत व चुगली करना हराम है।

रात देर गए यूवक का झुंड कि शकल में 2 वीलर व 4 वीलर --- सवार हो कर लोगों को तकलीफ देना, सवारियों, दुकानों तथा लोगों कि अन्य सम्पत्ति व चीज़ों पर संगबारी करना तथा रास्ते रोक कर सवारियों पर अनेक करतब दिखाना, आतिशबाजी के द्वारा अमन व शान्ति कि वायु में खौफ व भय व आंतक का वातावरण पैदा करना, इसलामी अहकाम व सिद्धांत के भी विरुद्ध है तथा मानवता कि दृष्टि से भी निवार्य व निरोध्य योग्य है।

विशेष रूप से पावन रातों में इस प्रकार का कर्म संघीन पाप है। रहमत वाले पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने रास्ते के अधिकार व शिष्ठाचार वर्णन करते हुए आदेश फरमायाः-

जब तुम को बैठना ही हो तो रास्ते का अधिकार दिया करो। सहाबा किराम ने निवेदन कियाः रास्ते का अधिकार कया है? या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम. तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नज़र नीचे रखो, हानिकारक चीज़ को दूर करना, सलाम का उत्तर देना, नेकी व भलाई का आदेश करना तथा बुराई से रोकना।

(सहीह बुक़ारी, हदीस संख्याः 2465, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्याः 5685, ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 4, पः 7)

अर्थात इन पावन रातों में प्रत्येक प्रकार के शरीअ़त के विरुद्ध कार्य से दूर रहें, इ़बादत व पालन के द्वारा रहमत व वरदान प्राप्त करने कि कोशिश करें। शबे मेअ़राज, शबे बरात तथा अन्य पावन रातों तथा दिनों में जीवन को अल्लाह तअ़ाला तथा इस के हबीब पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम कि मुहब्बत व आज्ञा पालन एवं इन कि सन्तुष्टी व प्रसन्नता में गुज़ारें।

14 रकात नमाज़ कि विशेष उत्तमता

शबे बरात किस प्रकार इ़बादत की जाए इस से संबंधित इमाम बैहखी ने शुअ़बुल इ़मान मं हदीस पाक व्याख्या की हैः-

भाषांतरः- हज़रत इ़ब्राहीम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमाया के हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने आदेश फरमायाः मैं ने हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम को शअ़बान कि 15 रात इ़बादत करते देखा तथा आप ने 14 रकात नमाज़ अदा फरमाई। फिर नमाज़ समाप्त होने के बाद आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम) तशरीफ लाय एवं 14 बार सुरह फातेहा, 14 बार सुरह इखलास, 14 बार सुरह फलक़, 14 बार सुरह नास तथा एक बार आयतुल कुरसी तथा सुरह तौबा कि 128 आयत तिलावत फरमाई। जब सरकार दो अ़ालम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम अपनी दुअ़ा समाप्त की तो मैं ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम से आप के इस मुबारक कर्म से संबंधित निवेदन किया जिस को मैं ने देखा था, तौ आप सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जो कोई व्यक्ति इस प्रकार कर्म करेगा जिस प्रकार तुम ने देखा है तो इस व्यक्ति के लिए 20 स्वीकृत हज्ज तथा 20 वर्ष के स्वीकृत रोज़ों का सवाब व पुण्य है। यदि वह इस दिन (15

दिनाक को) रोज़ा रखेगा तो इस के लिए 2 वर्ष, पूर्व तथा आने वाले वरष के रोज़ों का सवाब व पुण्य लिखा जाएगा।

(शुअ़ब उल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3683, अल दर्रुल मन्सूर, सुरह अल दुक़्क़ान, जामेअ़ अल हादीस, मुसनद अ़ल अशरह, हदीस संख्याः 33372)

इस हदीस कि सनद में कलाम है के अर्थात अ़मल कि फज़ीलत के पसार में ज़ईफ तथा मुतक्कम फिय रिवायत को भी स्वीकृत प्राप्त है।

जिस प्रकार रमज़ान के महीने कि उत्तमता व प्रतिष्ठा के बारे में हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से एक तवील रिवायत व्याख्या है। इस हदीस को अन्य मकातिबब फिक्र के विद्वान भी वर्णन करते हैं। अतः इस कि सनद में भी कलाम है। अल्लामा बद्रुद्दीन ऐ़नी व अन्य शारेहीन हदीस के तो फज़ाईल रमज़ान से संबंधित हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु कि रिवायत को मुन्कर कहा है।

जैसा के सहीह बुक़ारी शरीफ की विशाल शरह *उ़मदतुल खारी* में अ़ल्लामा ऐ़नी लिखते हैः-

भाषांतरः- इस हदीस की सनद सहीह नहीं है तथा इस सनद में *अयास* हैं, हमारे सेख ने कहाः निश्चय है के के सनद में "इ़ब्न अबी अयास" हैं। साब अल मीज़ान ने कहा के "अयास इ़ब्न अबी अयास" का हज़रत सई़द बिन मुसैयिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत करना मअ़रूप नहीं। अर्थात यह रिवायत मुन्कर है।

(उ़मदतुल खारी, हदीस संख्याः 9981)

फ़ज़ाइल रमज़ान वाली हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि रिवायत मुनकर होने के बावजूद अन्य मकातिब फिक्र (विचारधारा के शिक्षालय) के विद्वान भी अ़मली रूप से उसे स्वीकृत करते हैं तथा अपनी पुस्तकों में लिखते हैं तो शबे बरात में 14 रकात नमाज़ वाली इस रिवायत को स्वीकार करने में कयों मना करते हैं।

यदि अ़मल ना भी करें तो कम से कम इतना तो करें के जो अ़मल कर रहे हैं इन पर इनकार ना करें।

ज़ईफ (कमजोर) हदीस पर अ़मल से संबंधित लेखक कि पुस्तक *फ़ज़ाईल शबे बरात- अहादीस व आसार कि रोशनी में* पः 30 से 36 तक विस्तार व तफसील बहस (शास्त्रार्थ) उपलब्ध है। आप देखते सकते हैं।

शबे बरात में यह दुआएं पढें

हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैः शबे बरात मैं ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह दुआ करते हुए सुनाः

भाषांतरः ऐ अल्लाह! मैं तेरी सज़ा से तेरे अफु कि पनाह चाहता हुँ, तेरे ग़ज़ब व क्रोध से तेरी सन्तुष्टी व रज़ा कि पनाह में आता हुँ तथा तुझ से तेरी ही पनाह में आता हुँ, तेरी जात बुज़ुर्गी वाली है ऐ अल्लाह मैं तेरी सम्पूर्ण प्रशंसा का संग्रहित व कुल नहीं कर सकता, तु वैसा ही है जिस प्रकार तूने खुद अपनी तारीफ व प्रशंसा व सना की।

(शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3678)

फिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फरमायाः

भाषांतरः- ऐ आयशा! कया तुम ने इन (कथन) को याद कर लिया है? (हज़रत आयशा फरमाती हैः) मैं ने निवेदन कियाः हाँ! तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम इसे याद रखो तथा दुसरों को सिखाओ।

रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम प्रियतम के जहाँ के उच्च स्थर पर स्थापित हैं। वहीं अल्लाह के दरबार में अबदीयत व विनम्रता के भी उच्च दर्जे पर स्थापित हैं।

अर्थात सैयदुल अम्बया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने समुदाय को अल्लाह के दरबार में नियाज़मंदियों का नज़राना पेश करने कि शिक्षा दी तथा यह कथन समापन किए। जैसा के हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने 15 शअबान कि रात यह दुआ फरमाईः

भाषांतरः- तुझ को मेरे बातिन व ज़ाहिर ने सजदा किया तथा मेरा दिल तुझ पर इमान रखता है तो यह मेरा हाथ है तथा जो कुछ मैं ने इस से कर्म किए हैं, ऐ बुज़ुर्ग व बरतर जिस कि हर बडे लक्षय के लिए उम्मीद की जाती है (मेरी समुदाय के) बडे पाप को क्षमा करदे। मेरे चहरे ने इस जात को सजदा किया जिस ने इस को पैदा किया तथा इस में कान तथा आँख बनाएं।

(शुअबुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3680)

अल्लाह तआला हम सब को शबे बरात कि रहमतों तथा बरकतों से धनी व मालामाल फरमाए तथा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के

वसीले से इस पावन रात में हमारे सम्पूर्ण पाप क्षमा करदे तथा जन्नतुल फिरदौस हमारा ठिकाना बनाए।

आमीन....

अनवारे-क़िताबत- 08